कुषाण सत्ता का पतन

- कनिष्क की मृत्यु पश्चात् कुषाण साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हुआ।
- कनिष्क के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र वाशिष्क (102-106 ईस्वी) राजा बना उसने श्रीनगर के निकट जुष्कपुर एवं जयस्वामीपुर नगरों की स्थापना की।
- वाशिष्क के बाद हुविष्क (106-140) राजा बना। उसने कश्मीर में हुष्कपुर नगर बसाया (बारामूला के समीप)। वह शक रुद्रदामा से पराजित हुआ, मालवा शकों के अधिकार में चला गया। हुविष्क के काल में कुषाण सत्ता का केन्द्र पुरुषपुर से हटकर मथुरा में स्थापित हुआ।
- हुविष्क के बाद कनिष्क II राजा बना (140-145)। उसने रोमन सम्राटों के अनुकरण पर कैसर उपाधि का प्रयोग किया। वह महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र उपाधियों का भी प्रयोग करता था।

- कनिष्क II के बाद वासुदेव राजा बना (145 - 176 ईस्वी) यह कुषाण वंश का अंतिम महान राजा था। उसके काल तक उत्तर-पश्चिम का बड़ा भूभाग कुषाणों के अधिकार से निकल गया। वह शैव था।
- वासुदेव I के पश्चात का कुषाण इतिहास बहुत स्पष्ट नहीं है। उसके बाद शासन करने वाले कनिष्क III एवं वासुदेव II के सम्बन्ध में सिक्कों से ही प्रामाणिक सूचनायें प्राप्त होती हैं। चीनी स्रोतों से ज्ञात होता है कि वासुदेव II ने 230 ईस्वी में चीनी दरबार में अपना राजदूत भेजा था।
- वासुदेव II के बाद ईरान में ससानी वंश, उत्तरी भारत में भारशिव नाग, यौधेय, कुणिन्द, मालव आदि स्वतन्त्र शक्तियों का उदय हुआ।

इस प्रकार भारत में कुषाण सत्ता का अन्त हो गया।